CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Mobile No-+91-9076651662 **Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com**

Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

2021-2022

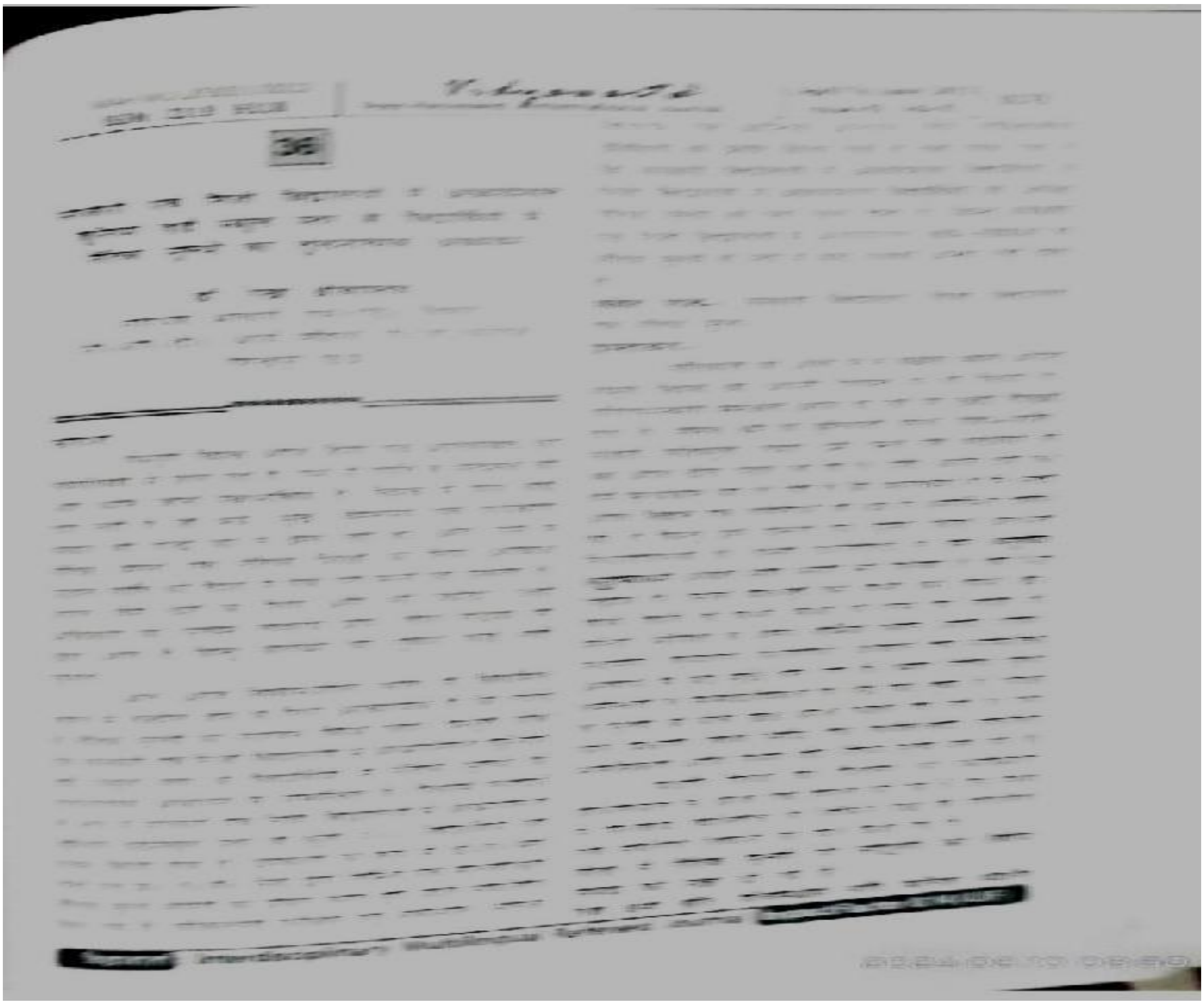

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

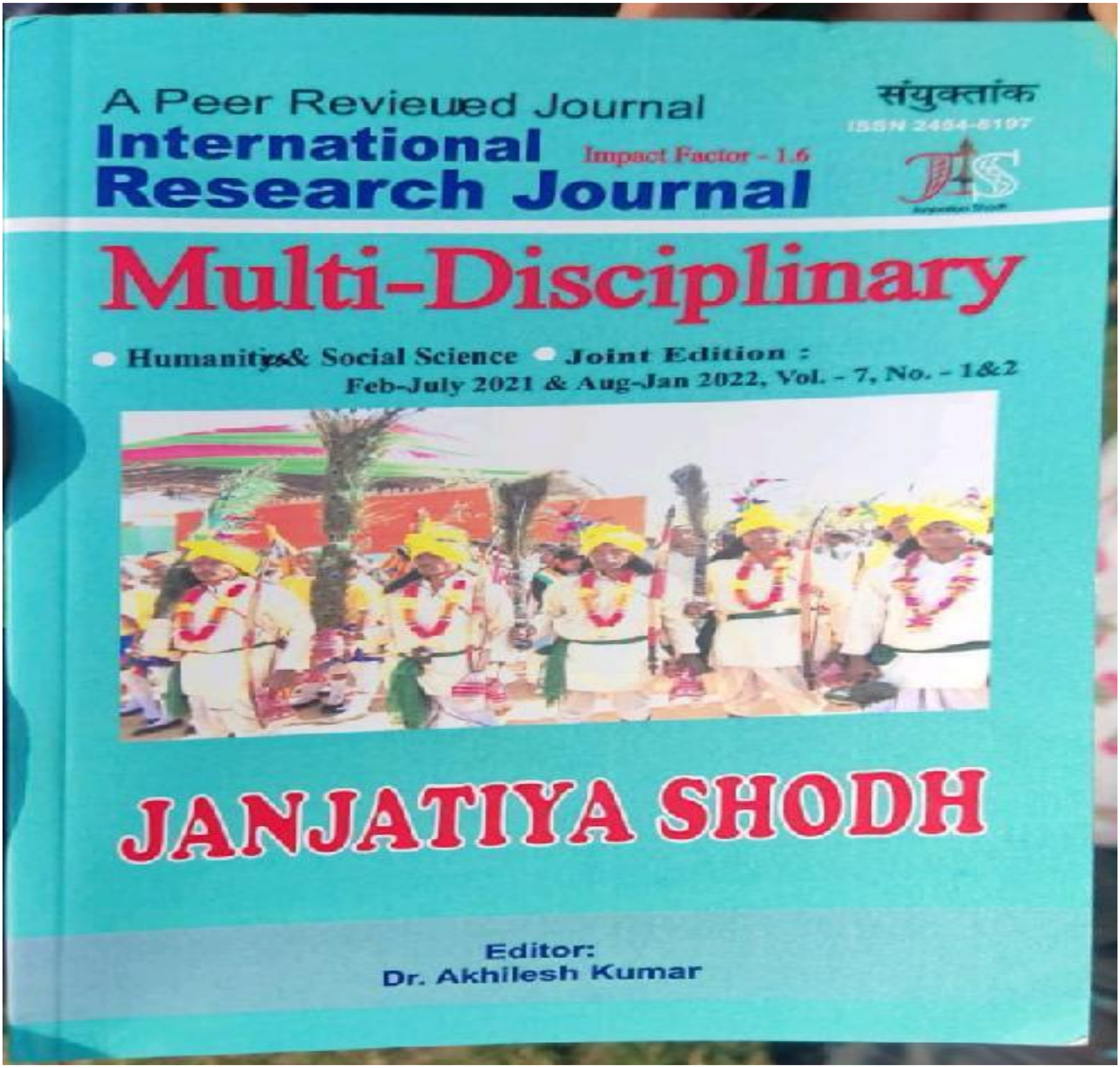

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

Multi-Disciplinary **Janjatiya Shodh**
A Peer Revieued Research Journal — Impact Factor - 1.6
Vol : 7, No. : 1&2, 2022 — ISSN 2454-8197

भारत में अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के संवैधानिक संरक्षण के प्रावधान

स्वप्निल पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग,
सी०आर०डी० पी०जी० कालेज गोरखपुर (उ. प्र.)

भारत जैसे विकासशील तथा बड़ी जनसंख्या वाले देश में विभिन्न प्रकार की जातियों तथा जनजातियों को उनके आर्थिक एवं सामाजिक जीवन तर के आधार पर जातिगत विभाजित किया गया है। स्वतंत्रता संग्राम के समय हमारे राष्ट्रीय विचारकों ने अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों की दशा को सुधारने का पुरजोर समर्थन किया जिसका प्रभाव पड़ा कि जब संविधान निर्माण किया गया तभी संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने इन सभी जातियों के सामाजिक शैक्षणिक और आर्थिक विकास के लिए अत्यधिक संवैधानिक प्रावधानों को समाहित करने का प्रयास किया। भारत के संविधान में इन जातियों को मौलिक अधिकार, नीति निर्देशक तत्व आदि के माध्यम से संविधान में संरक्षण दिया गया है जिनमें सर्वप्रथम जनजातियों की दशा को सुधारने का पुरजोर समर्थन किया। संविधान के अनुच्छेद 338 में संबोधन करके 81 वां संशोधन अधिनियम 2003 द्वारा 338 नया अनुच्छेद जोड़ दिया गया है। आंध्र प्रदेश असम बिहार गुजरात केरल मध्य प्रदेश महाराष्ट्र उडीसा राजस्थान तमिलनाडु पश्चिम बंगाल उत्तर प्रदेश मणिपुर में 14 जनजातियों शोध संस्थान स्थापित किए गए है, इनमें से कुछ संस्था संग्रहालय का भी कार्य कर रहे हैं। विदेश में उच्च अध्ययन के लिए राष्ट्रीय विदेश छात्रवृत्ति और यात्रा अनुदान।

मूल शब्दावली - अनुसूचित जनजातियां, जाति व्यवस्था, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, अस्पृश्यता अधिनियम

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 5.427 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 13, No. 5 Year - 13 May, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : [illegible]

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 5.427

Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 13, No. 5, May, 2022 ISSN : 0976 6650

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत चीन संबंध : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के विशेष संदर्भ में

स्वप्निल पाण्डेय

शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर

डॉ० दिग्विजय नाथ पाण्डेय

वरिष्ठ आचार्य, एच०आर० पी०जी० कालेज, खलीलाबाद

सारांश

विश्व के मानचित्र में भारत दक्षिण एशियाई देशों का प्रतिनिधित्व करता माना जाता रहा है। भारत का पड़ोसी देश चीन के साथ संबंध सदैव परिवर्तनशील रहा है। भारत चीन के मध्य जो विवाद प्रारंभ हुआ वह थी तिब्बत की समस्या। चीन तिब्बत को अपना अभिन्न अंग मानता था, जो दोनों देशों के मध्य कटुता को प्रारंभ करने के लिए पर्याप्त था। इस कटुता के बाद भी भारत सदैव चीन का समर्थन करता रहा। भारत चीन के दशकों के तनाव में 21वीं सदी के आरंभ में अचानक कमी आने लगी। जिससे दोनों देशों के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंध बनने लगे। चीनी नेता एवं राष्ट्रपति हू जिंताओ तथा प्रधानमंत्री वेन जियाबाओ ने मिलकर मैत्रीपूर्ण संबंध पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। भारत में 2014 में प्रधानमंत्री के पद पर नरेंद्र मोदी ने कार्य आरंभ किया। इसके पश्चात भारत और चीन के संबंधों में एक परिवर्तनकारी आंदोलन दिखना प्रारंभ हुआ और वह उस नई ऊर्जा, उत्साह और रचनात्मक तरीकों से परिलक्षित हो रहा है। अतः प्रस्तुत शोध प्रपत्र में ***वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत चीन संबंध : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के विशेष संदर्भ में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।***

मूल शब्दावली : मेक इन इंडिया, परिवर्तनकारी आंदोलन, परिलक्षित, भारत चीन संबंध।

प्रस्तावना–

विश्व के मानचित्र में भारत दक्षिण एशियाई देशों का प्रतिनिधित्व करता माना जाता रहा है। भारत का पड़ोसी देश चीन के साथ संबंध सदैव परिवर्तनशील रहा है। जिस समय भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई उस समय चीन में भयंकर गृह युद्ध चल रहा था। साम्यवाद तत्कालीन चीन में फैली गृह युद्ध में विजय की ओर अग्रसर हो रहा था। जहां एक तरफ चीन गृह युद्ध से ग्रस्त था वहीं भारत देश विभाजन के पश्चात की समस्याओं से ग्रस्त होता जा रहा था। जिससे प्रारंभ में भारत चीन संबंध औपचारिक था। दोनों देशों के मध्य मित्रता, सहयोग का वह दौर प्रारंभ हो गया जिसमें दोनों देशों ने पूरी तत्परता से एक दूसरे का साथ दिया, जिसका तत्कालीन उदाहरण जापान द्वारा चीन के मंचूरिया प्रांत पर जब 1931 में आक्रमण किया गया तब भारत के राष्ट्रवादियों ने न केवल चीन दिवस मनाया बल्कि जापानी वस्तुओं का बहिष्कार भी किया।

भारत चीन के मध्य जो विवाद प्रारम्भ हुआ वह थी तिब्बत की समस्या। चीन तिब्बत को अपना अभिन्न अंग मानता था, जो दोनों देशों के मध्य कटुता को प्रारंभ करने के लिए पर्याप्त था। इस कटुता के बाद भी भारत सदैव चीन का समर्थन करता रहा। चीन को यूनाइटेड नेशन में प्रतिनिधित्व दिलाने के लिए 1962 में भारत पर चीन के आक्रमण के बाद भी पूरा समर्थन जारी रखा।

1965 से 90 के बीच के दशक में जब चीन ने पाकिस्तान के इस्लामी गणतंत्र के साथ घनिष्ट संबंध स्थापित कर लिया तब यह सिद्ध हो गया कि चीन की यह नीति निश्चित रूप से भारत विरोधी थी तथा भारत को अलग–थलग करने के लिए की गई थी। 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के समय चीन स्वतंत्र रूप से भारत विरोधी शत्रुतापूर्ण नीति अपनाई।

चीन के संस्थापक माओत्से तुंग के नेतृत्व में चीन ने अत्यंत विकास किया। परंतु 1977 में मृत्यु के पश्चात भारत में श्रीमती इंदिरा गांधी के पराजय के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के नेतृत्व में दोनों देशों के बीच संबंध सामान्य होने लगा।

1979 ईस्वी में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई ने चीन की यात्रा की। पर उसी समय चीन ने वियतनाम पर आक्रमण कर दिया जिससे बाजपेई जी बीच यात्रा में ही यात्रा स्थगित करके वापस भारत आ गए। जिससे भारत–चीन संबंध पुनः कटुता के दौर से गुजरने लगा।

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

AEDJES

AED Journal of Educational Studies

• JOINT VOLUME 9 (2) & 10 (1) • AUG. 2020 & FEB. 2021

Refereed Journal
Department of Education
Maharana Pratap Campus
Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University
Gorakhpur 273009 U.P. (India)
https://www.aedjesgkp.in

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

Mobile No-+91-9076651662 **Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com**
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

[illegible] Journal of Educational Studies
Vol. [illegible], UGC Approval No.: [illegible]
ISSN : [illegible]

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में गुणात्मक उन्नयन हेतु व्यवहारिक तथ्यों का मूल्यांकन एवं सुझाव

रेखा श्रीवास्तव* एवं [illegible] कुमार वर्मा**

पृथ्वी पर मानव

जीवन यदि ईश्वर का उपहार है तो शिक्षा इस धरा की अमूल्य निधि, जो शिक्षक के संसर्ग से ही प्राप्त होती है, इसीलिए शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। वस्तुतः शिक्षा प्रक्रिया के तीनों प्रमुख अंगों, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु में से शिक्षक का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी शिक्षक होता है। शिक्षक के निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी समाज ज्ञानार्जन की सही दिशा का अनुसरण नहीं कर सकता।

इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री नेल्सन एन० [illegible] का कहना है कि "शिक्षा की किसी भी योजना में मैं अध्यापक के केन्द्रीय स्थान का पक्षधर हूँ। विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र की सम्पत्ति और उसकी भावी [illegible] होते हैं। इनके मध्य अध्यापक की भूमिका बागीचे के माली के समान है, जो विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास के उत्तरदायित्व का निर्वहन करता है। किन्तु उक्त उत्तरदायित्वों का निर्वहन शिक्षक तभी कर सकता है जबकि वह विषय का ज्ञाता होने के साथ–साथ शिक्षण नियोजन, संगठन, अभिकल्पन, सम्प्रेषण एवं मूल्यांकन जैसे शिक्षणीय व्यवहारों में भी दक्ष एवं निष्णात हो। यह निपुणता उसे शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त होती है।

यह निर्विवाद है कि शिक्षा का स्तर बहुत कुछ शिक्षक की योग्यता, कार्यक्षमता व कुशलता पर निर्भर होता है तथा शिक्षक की कार्यकुशलता काफी सीमा तक उसके अच्छे प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। अतः शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षकों का समुचित रूप से प्रशिक्षण हो। ये प्रशिक्षण कई स्तरों पर संचालित होता है जैसे– प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर। इन सभी स्तर पर योग्य एवं कुशल शिक्षकों की प्रतिपूर्ति एवं अध्यापक शिक्षा प्रणाली के मानक निर्धारण एवं गुणवत्ता संवर्द्धन के ध्येय से राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद अधिनियम 1993 के अंतर्गत 17 अगस्त 1995 में 'राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद' (NCTE) एक संवैधानिक संस्था के रूप में अस्तित्व में आई। जिसके प्रमुख कार्य है–भारतीय शिक्षा प्रणाली के मानकों, प्रक्रियाओं एवं धाराओं की स्थापना करना, विनियमन करना तथा उन्हें समुचित रूप से बनाये रखना, अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित सर्वेक्षण तथा अध्ययन करना, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रवेश, चयन, अवधि, पाठ्यक्रम व परीक्षा, शिक्षण शुल्क आदि के सम्बन्ध में दिशा निर्देश तैयार करना तथा प्रशिक्षण संस्थाओं को मान्यता प्रदान करना। साथ ही अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान तथा नवाचार को प्रोत्साहित करना।

अपने उपर्युक्त दायित्वों के निर्वहन के परिप्रेक्ष्य में NCTE ने शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाओं के लिए अनिवार्य कर दिया है कि वे परिषद से मान्यता प्राप्त करें। परिषद मान्यता प्रदान करते समय संस्था के आर्थिक संसाधनों, पुस्तकालय प्रयोगशालाएँ आदि के साथ–साथ पाठ्यक्रम के समुचित संचालन के लिए

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर–एफ०एड० विभाग चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी०जी० कालेज, गोरखपुर
**[illegible] शिक्षा [illegible] विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज

(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

Mobile No-+91-9076651662 **Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com**

Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

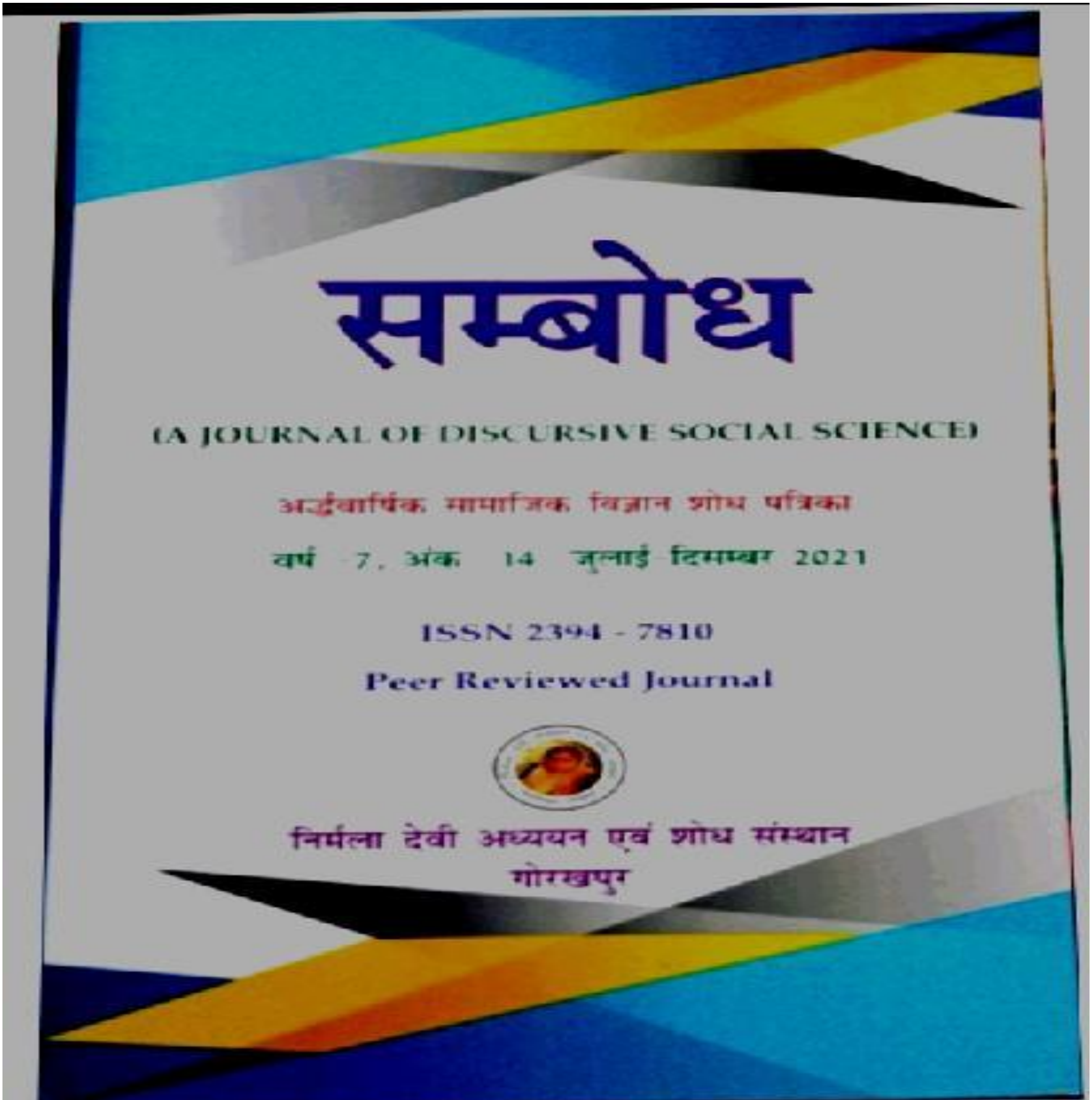

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

13

Disaster Management as a Component in School Curriculum

Pooja Gupta*

The concept of curriculum is as dynamic as the changes that occur in society. In its narrow sense, curriculum is viewed merely as a listing of subjects to be taught in school. In a broader sense, it refers to the total learning experiences of individuals not only in schools but in society as well. The first curriculum to be in existence was the saber tooth curriculum by Harold Benjamin in 1939 in the united states, which the young people were taught on how produce food, shelter and security by an intelligent man known as the New Fist in a village in the olden days. The topics involve in the curriculum were "fish grabbing with bare hands, "woolly horse clubbing, "saber tooth tiger scaring with fire. In this section we will be considering the concept and factors to be considered in determining the curriculum of a nation.

The Concept of Curriculum

Curriculum which from centuries is defy from one acceptable definition because it is seen from different people

* Assistant Professor, Home Science, CRD PG College, Gorakhpur, UP.

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 12 Issue 6, Jul 2021,
ISSN: 2649-2396 Impact Factor: 6.081
Journal Homepage: http://www.ijra.us, Email: editoijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बौद्धकालीन समाज : दाम्पत्य जीवन के विशेष संदर्भ में

डा0 इतेन्द्र धर दूबे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कालेजए गोरखपुर

बुद्ध के काल में नारी के प्रति समाज की क्या धारणा थी, इस संदर्भ में प्राचीन बौद्ध विचारकों ने नारी जीवन के विभिन्न पक्षों पर पृथक पृथक मत प्रस्तुत किया है। बौद्ध धर्मग्रन्थों एवं लौकिक साहित्य से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर बुद्धकालीन नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा तथा अप्रतिष्ठा के निर्धारण का प्रयास ही प्रस्तुत अध्याय में किया गया है। बौद्ध धर्मग्रन्थों में एक तरफ नारी की प्रशंसा की गयी है वही उनकी निंदा करने में भी संकोच नही दिखाया गया है।

दाम्पत्य जीवन

पालि–पिटक से व्यक्त होता है कि बुद्धकालीन समाज में पति–पत्नी का दाम्पत्य–जीवन अधिकांशतः आनन्दमय था। उनमें पारसपरिक सम्मान तथा प्रगाढ़ प्रेम होता था। परन्तु जातक कथाओं में दुःखी दाम्पत्य जीवन के भी अनेक उदाहरण मिलते है। इसका कारण प्रायः स्त्री की दुष्टता को बतलाया गया है। परन्तु कुछ में पति की धुर्तता को भी कारण बताया गया है। बौद्ध लेखकों का लक्ष्य प्रायः कथा के माध्यम से भिक्षुओं को स्त्री–साहचर्य से विरक्त करना था। अतः जातकों में स्त्री जाति को दुष्टता का अवतार बना दिया गया। बौद्ध धर्माचार्यों ने स्त्री–सम्पर्क से भिक्षुओं को दूर रखनें का प्रयत्न किया, क्योकि नारी साहचर्य किसी भी समय उन्हे भिक्षु जीवन के आदर्श से च्युत कर सकता था। ऐसा कहा गया कि पुरुष का विवके नारी के निकट जाकर विनष्ट हो जाता है। इस धारणा को अंगीकार करने के कारण बौद्ध धर्मग्रन्थों में नारी का वर्णन अनेकत्र दुचारिणी के रुप में किया गया। एक उद्धरण में उल्लिखित है कि वे नर अधम है जो स्त्रियों के वश में हो जाते है। स्त्रियाँ प्राण के समान रक्षा करने पर भी पुरुष की प्रेमी होती है। दिन रात परिचर्या करने पर भी अधर्मा होती है। स्त्रियो की मित्रता सदैव घातक होती है। वे अविश्वसनीय अधर्मा और पाताल में गिराने वाली प्रपात के सदृश है। इसलिए उत्तम कल्याण के इच्छुक पुरुष स्त्रियों के प्रति अनासक्त होकर शोकरहित एवं सुखी होते है। अन्यत्र एक प्रसंग में स्त्रियों की तुलना पृथ्वी से करते हुए कहा गया है कि स्त्रियों का विश्वास नही करना चाहिए, न ही उनकी प्रशंसा करनी चाहिए क्योकिं जैसे वसुन्धरा, उत्तम, अधम सभी का आधार है, सभी को सहन करती है, किसी पर कोप नही करती, उसी प्रकार ये स्त्रियाँ है। स्त्रियों की तुलना उस दुष्ट मृग से किया गया है जो रक्त मांस भोजी तथा कठोर ह्दय वाला तथा दूसरों की हिंसा में रत रहने वाला है। वह पुरुषों को अपना ग्रास बना लेती हे। स्त्री शब्द की व्याख्या करते हुए भी उनके [illegible] निम्न श्रेणी के शब्दों का प्रयोग किया है जिससे नारियों की गिरी हुयी स्थिति का बोध [illegible]ता है। इन्हे वेश[illegible] नारी, गणिका और बन्धकी के साथ ही बधिका भी कहा गया है। एक [illegible]तक कथा में क[illegible]या है कि स्त्री स्वभाव को समझ पाना असम्भव है, उनका चित्त चंचल होता है, जैसा [illegible] बानर का। दूसरी जातक कहानी में बतलाया गया है कि एक पति ने अपनी

realme 12x 5G

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC)
दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

Principal
Chandrakanti Ramawati Devi
Arya Mahila P.G. College
Gorakhpur